डेबोरा सैम्पसन

युद्ध में लड़ने गई



ब्रायना स्टीवंस

चित्र: फ्लोरेंस हिल

साल था 1781. अमेरिकी क्रांति जोरों पर थी. डेबोरा सैम्पसन अधिकांश पुरुषों जितनी ही ऊंची और लगभग उतनी ही ताकतवर थीं. उन्हें कोई कारण नहीं दिखता था कि वो देश की स्वतंत्रता के लिए क्यों नहीं लड़ सकतीं थीं - सिवाय इस तथ्य के कि वो एक महिला थीं.

यह एक महिला की रोमांचक, और सच्ची कहानी है, जो सभी बाधाओं के बावजूद युद्ध में लड़ने गई. डेबोरा सैम्पसन ने खुद को एक मर्द के रूप में प्रस्तुत किया और सेना में शामिल हो गईं, और चोटों और बीमारियों के बावजूद, किसी ने भी अंत तक उनका रहस्य नहीं जाना. यह कल्पना से अधिक रोमांचक सत्य है.

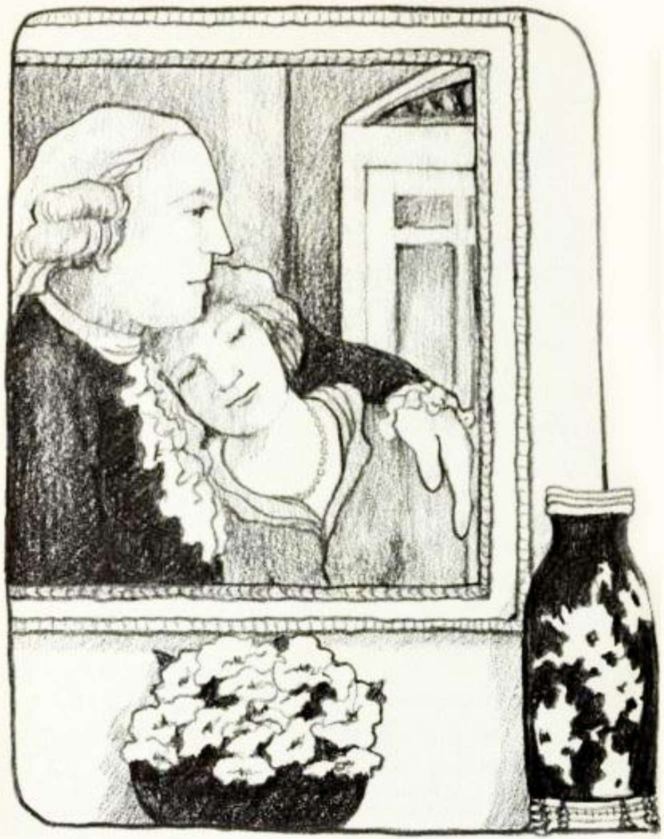


डेबोरा सैम्पसन

युद्ध में लड़ने गई

ब्रायना स्टीवंस

चित्र: फ्लोरेंस हिल



1760 में जॉर्ज वाशिंगटन की
शादी को एक साल हो गया था.



थॉमस जेफरसन अभी कॉलेज शुरू
ही कर रहे थे. वो 16 साल के थे.

बेंजामिन फ्रैंकलिन यूरोप के दौरे पर थे.



मिसेज़ सैम्पसन को बच्चा होने वाला था.



डेबोरा सैम्पसन का जन्म 17 दिसंबर, 1760 को हुआ.

अपने जीवन के पहले पाँच वर्षों के दौरान, जॉर्ज वाशिंगटन को अपनी पत्नी मार्था को खुश करने की चिंता की.



थॉमस जेफरसन अच्छे ग्रेड प्राप्त करने को लेकर चिंतित थे.



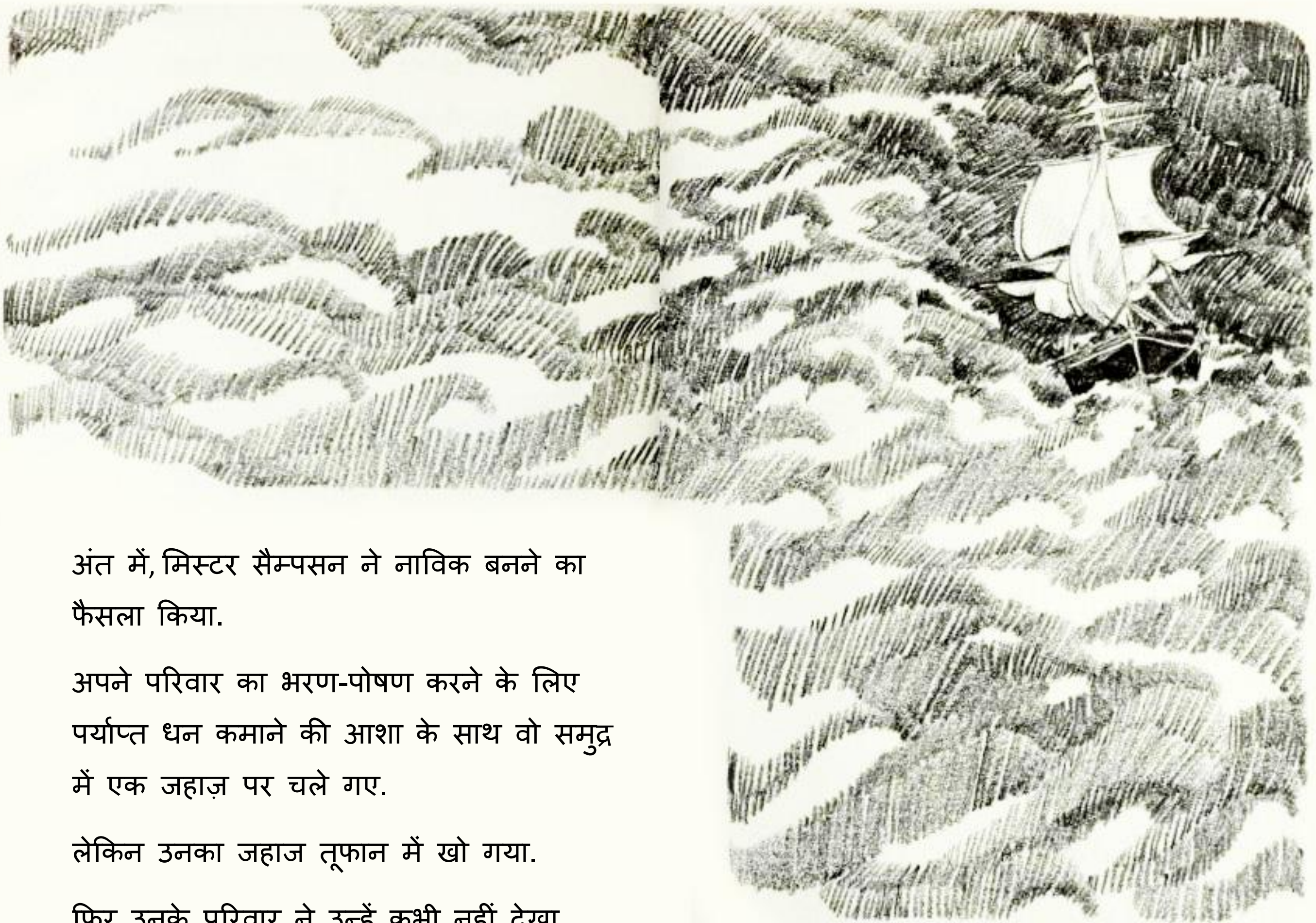
बेंजामिन फ्रैंकलिन राजनीति को लेकर चिंतित थे.



सैम्पसन परिवार पैसे को लेकर चिंतित था.

ऐसा लगता था कि उनके पास पर्याप्त पैसा नहीं था.





अंत में, मिस्टर सैम्पसन ने नाविक बनने का फैसला किया.

अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त धन कमाने की आशा के साथ वो समुद्र में एक जहाज़ पर चले गए.

लेकिन उनका जहाज तूफान में खो गया.

फिर उनके परिवार ने उन्हें कभी नहीं देखा.

किसी और ने भी उन्हें कभी नहीं देखा.

1760 के दशक में महिलाओं के लिए बहुत कम नौकरियां थीं.

मिसेज़ सैम्पसन अकेले छह बच्चों की देखभाल नहीं कर सकती थीं.

उन्होंने कुछ बच्चों को अपने रिश्तेदारों के पास रहने के लिए भेज दिया.

डेबोरा अपने चचेरे भाई के साथ रहने गई, फिर एक पादरी की विधवा के साथ.

और जब वो 10 साल की हुई, तो डेबोरा, बेंजामिन थॉमस परिवार के साथ रहने चली गई.

वो एक भाग्यशाली कदम साबित हुआ.

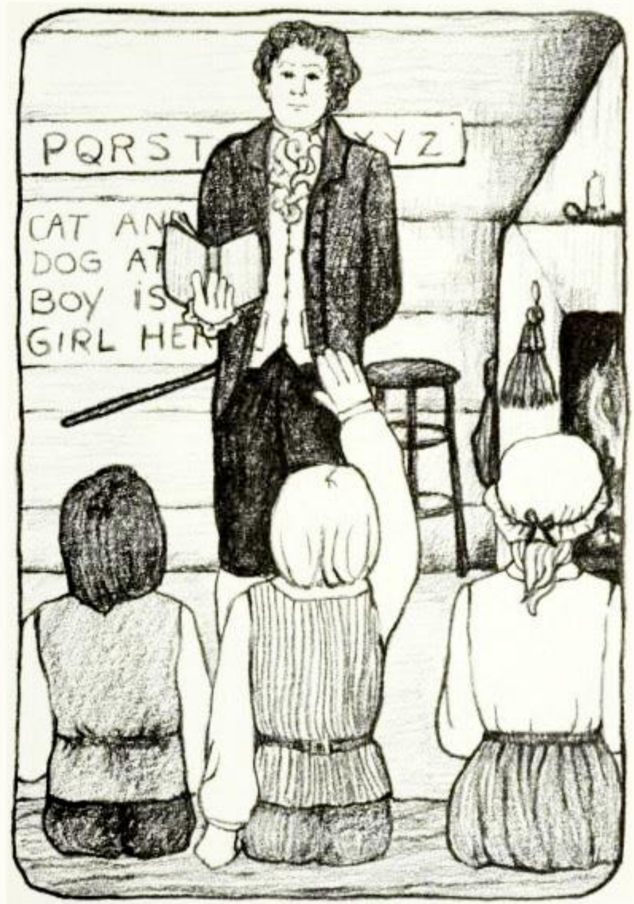
डेबोरा को थॉमस परिवार में कड़ी मेहनत करनी पड़ी.

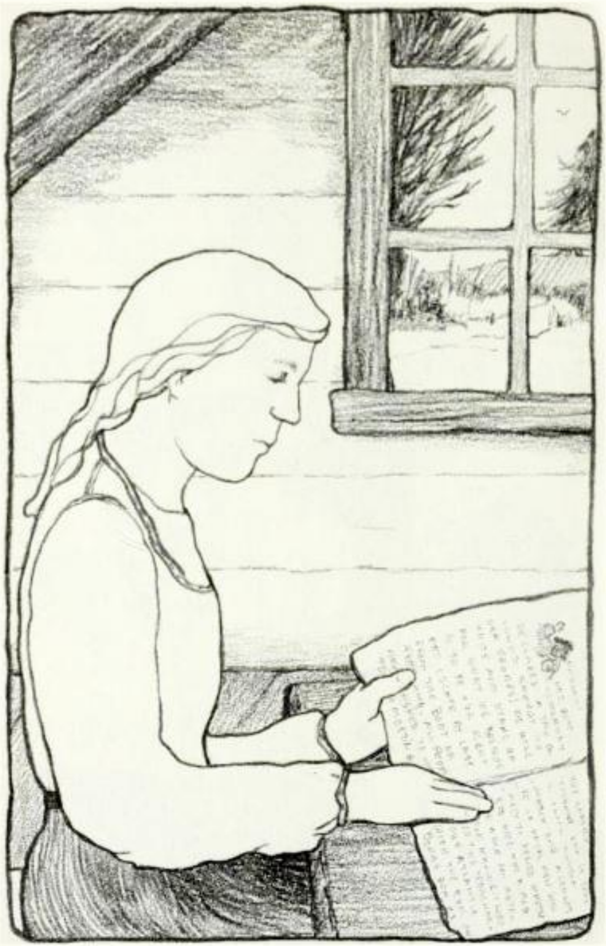
उसने खेतों की जुताई की और गायों का दूध दुहा.

वो जानवरों को चराती थी और अपने सारे कपड़े खुद बनाती थी.

लेकिन वो स्कूल भी जाती थी!

1770 में बहुत सी लड़कियां इतनी भाग्यशाली नहीं थीं.





डेबोरा को स्कूल बहुत पसंद था.

उसे विशेष रूप से पढ़ना सीखना पसंद था.

जल्द ही वो उन सभी अखबारों को पढ़ रही थीं जो उसके हाथ आते थे.

वो किस बारे में पढ़ रही थीं?

टैक्स यानि करों के बारे में.

उस समय अमेरिका 13 उपनिवेशों से मिलकर बना था.

उसे तब तक संयुक्त राज्य नहीं कहा जाता था.

वे सभी ब्रिटेन के उपनिवेश थे.

ब्रिटेन को पैसे की जरूरत थी, इसलिए उसने नए कानून पारित करने शुरू कर दिए.

इन कानूनों ने उपनिवेशवादियों को अखबारों, चाय और पेन्ट जैसी कई चीजों पर टैक्स देने को मज़बूर किया.

टैक्स का सारा पैसा ब्रिटेन चला जाता था.





कई उपनिवेशवादियों को यह बिल्कुल उचित नहीं लगा.

उनका पैसा ब्रिटेन क्यों जाए?

वे खुद एक नई दुनिया बनाना चाहते थे.

उन्हें खुद अपने पैसों की जरूरत थी!

ब्रिटेन को उन्हें अकेला छोड़ देना चाहिए!

ब्रिटेन को उन्हें खुद पर शासन करने देना चाहिए!

इन नाराज उपनिवेशवादियों को देशभक्त कहा जाता था.

डेबोरा उनसे सहमत थीं.

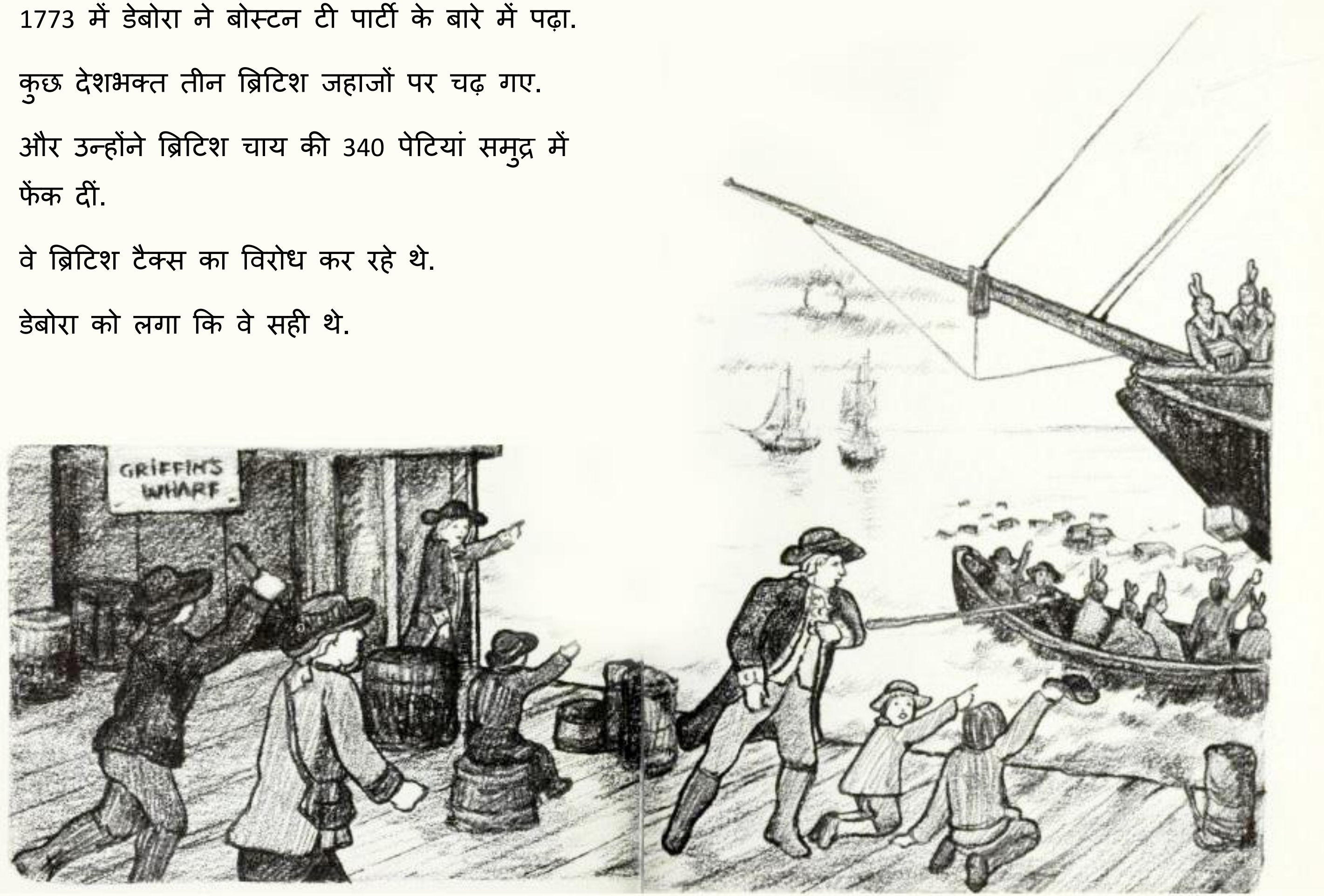
1773 में डेबोरा ने बोस्टन टी पार्टी के बारे में पढ़ा.

कुछ देशभक्त तीन ब्रिटिश जहाजों पर चढ़ गए.

और उन्होंने ब्रिटिश चाय की 340 पेटियां समुद्र में फेंक दीं.

वे ब्रिटिश टैक्स का विरोध कर रहे थे.

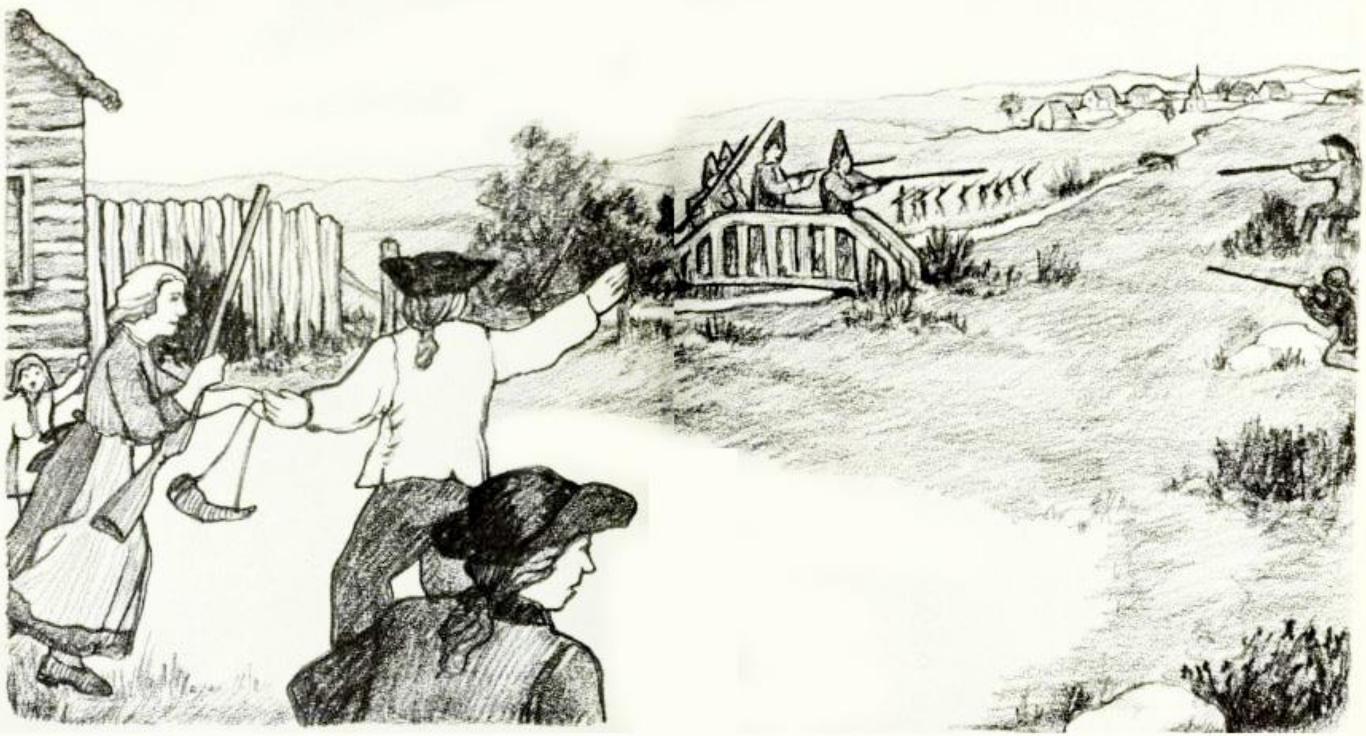
डेबोरा को लगा कि वे सही थे.



1775 में डेबोरा ने ताजा खबर पढ़ी.

ब्रिटिश सैनिकों और उपनिवेशवादियों के
बीच लड़ाई शुरू हो गई थी.

अमेरिकी क्रांति की शुरुआत हो चुकी थी.



डेबोरा भी लड़ना चाहती थी.

लेकिन वो केवल 14 साल की थी.

इसके अलावा, वो एक लड़की थी.

केवल लड़कों और पुरुषों को ही सेना में शामिल होने की अनुमति थी.

लेकिन 7 साल बाद डेबोरा 21 साल की हुई, पर युद्ध अभी भी जारी था.

डेबोरा अब एक ऊंचे कद की युवती थी.

वास्तव में, वो कई पुरुषों से लंबी थी.

वो ताकतवर भी थी.

वो खेत जोत सकती थी.

वो एक कुशल बढ़ई भी थी.

उसने अपने हाथों से एक खलिहान बनाया था.

"यदि मर्द स्वतंत्रता के लिए लड़ सकते हैं," उसने सोचा, "तो फिर मैं क्यों नहीं?"



वो उसके बारे में जितना अधिक सोचती, उतना ही ज़्यादा वो लड़ना चाहती थी.

फिर एक दिन डेबोरा ने एक मर्दाना सूट सिला.



उसने अपने बालों को पुरुषों की तरह पीछे बांधा.



उसने अपने स्तनों के चारों ओर कसकर एक कपड़ा बाँध लिया ताकि उसकी छाती पुरुषों की तरह सपाट रहे.

उसने अपना नया सूट पहना.

फिर वो 35 मील पैदल चलकर बिलिंघम, मैसाचुसेट्स गई.

वहां जाकर वो सेना में शामिल हो गई.



बिलिंघम में कोई भी डेबोरा को नहीं जानता था.

उसने अपना नाम रॉबर्ट शर्टलेफ बताया.

किसी को अंदाज़ नहीं हुआ कि वो एक महिला थी.

सभी ने सोचा कि वो एक जवान आदमी थी.

कुछ अमेरिकी सैनिक केवल 16 साल के थे.

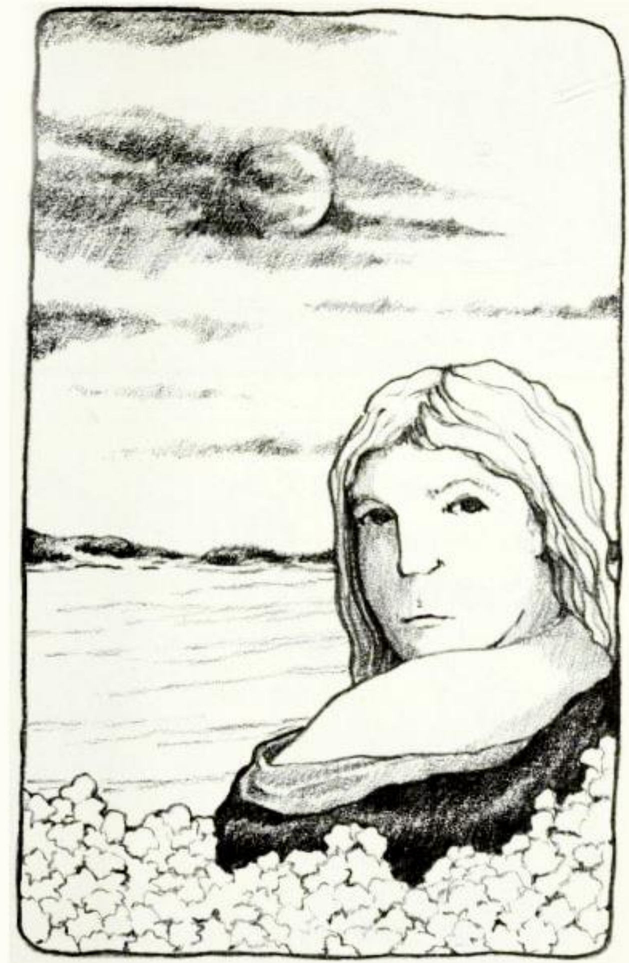
डेबोरा, न्यूयॉर्क शहर के पास वेस्ट पॉइंट पर एक रेजिमेंट में शामिल हो गई.

दिन में वो अपनी रेजिमेंट के साथ मार्च करती थी.

शाम को सारे सैनिक हडसन नदी में नहाते थे.

लेकिन डेबोरा हमेशा देर रात को ही नहाती थी.

जिससे किसी को यह पता नहीं चले कि वो एक महिला थी.





डेबोरा का अगला काम और भी खतरनाक था.

अंग्रेज, अमेरिकी किसानों की गायें चुरा रहे थे.

अमरीकी गायें, ब्रिटिश सेना का भोजन बन रही थीं.

डेबोरा की रेजिमेंट से इस चोरी को रोकने के लिए कहा गया.

न्यूयॉर्क शहर के आसपास लड़ाई कठिन थी.

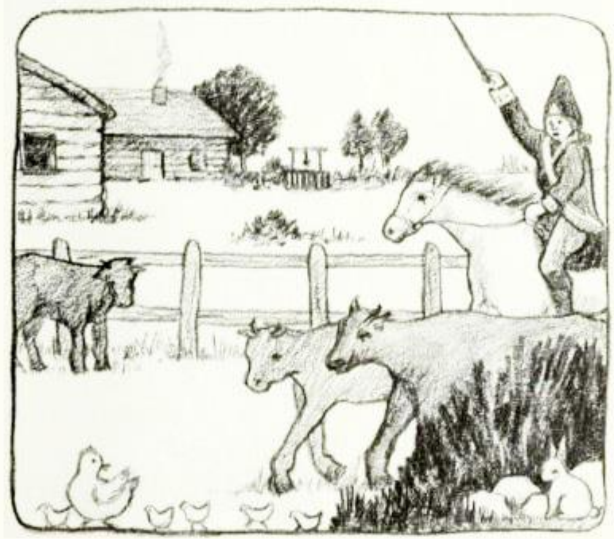
जल्द ही डेबोरा की रेजिमेंट को एक कार्रवाई लिए बुलाया गया.

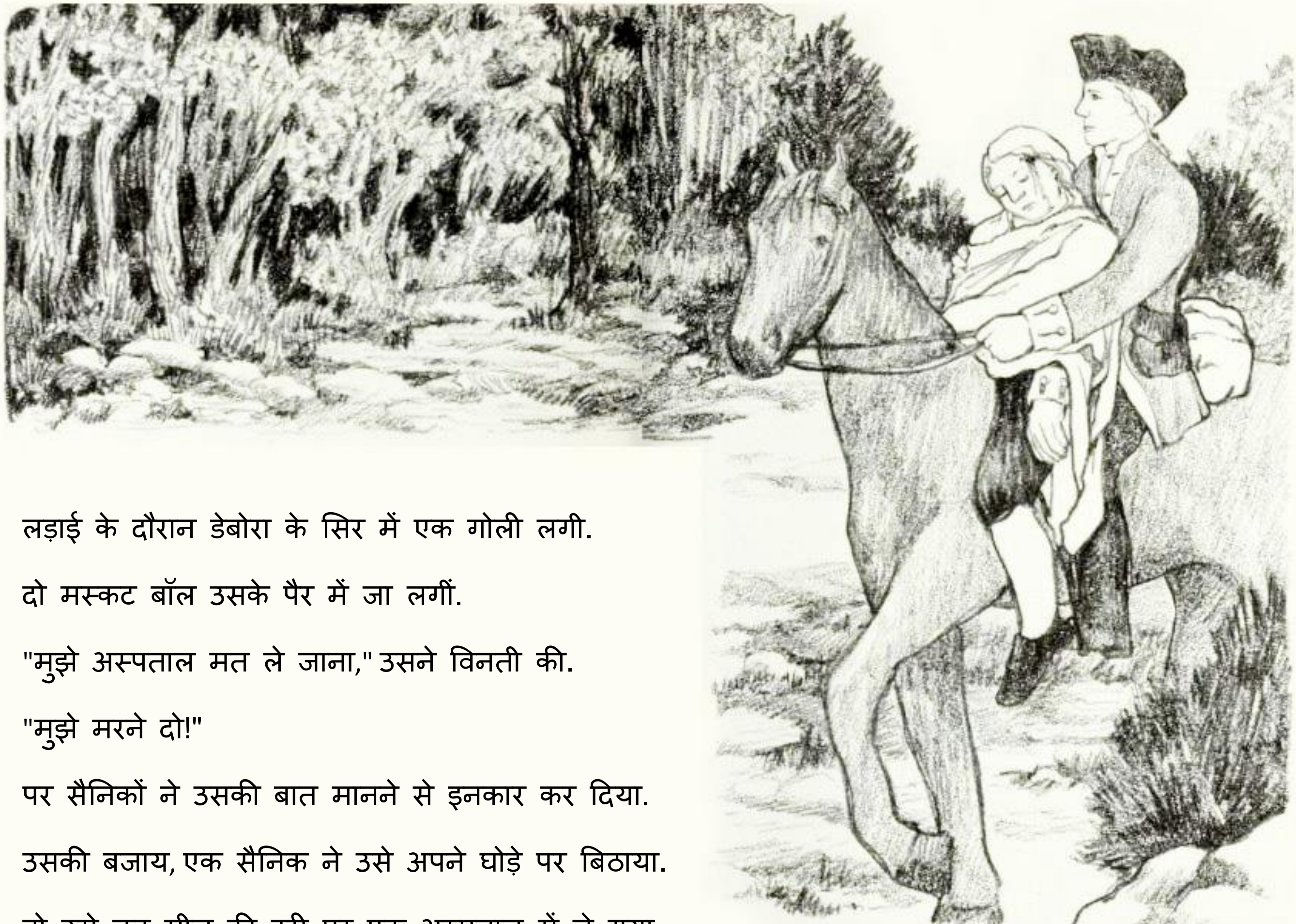
डेबोरा और कुछ अन्य सैनिकों को अंग्रेजों की जासूसी करने के लिए भेजा गया.

उन्होंने पता लगाया कि अंग्रेजों ने कहाँ अपना डेरा डाला था.

फिर उन्होंने उसकी सूचना दी.

अगले दिन अमेरिकियों ने हमला किया और वे जीत गए.





लड़ाई के दौरान डेबोरा के सिर में एक गोली लगी.

दो मस्कट बॉल उसके पैर में जा लगीं.

"मुझे अस्पताल मत ले जाना," उसने विनती की.

"मुझे मरने दो!"

पर सैनिकों ने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया.

उसकी बजाय, एक सैनिक ने उसे अपने घोड़े पर बिठाया.

वो उसे छह मील की दूरी पर एक अस्पताल में ले गया.

डेबोरा बुरी तरह से घायल हो गई थी, लेकिन वो दर्द से जितना डरती थी उससे कहीं ज्यादा अस्पताल से डरती थी.

उसे यकीन था कि अस्पताल में लोगों को पता चल जाएगा कि वो एक महिला थी.

एक डॉक्टर ने उसके सिर पर पट्टी बांधी.

"क्या आपके कहीं और चोट लगी है?" उसने पूछा.

"नहीं," डेबोरा ने झूठ बोला.

डॉक्टर चला गया.

तभी उसने डेबोरा की पैंट को एक कुर्सी पर पड़ा देखा.

उसने पैंट को उठाया.

डॉक्टर ने पैंट में मस्कट बॉल (गोली) द्वारा बनाए गए छेद में अपनी उंगली घुसाई.

"यह क्या है?" उसने पूछा.

"एक पेड़ की शाखा में फंसकर मेरी पैंट फट गई थी," डेबोरा फिर से झूठ बोली.

डॉक्टर ने उस पर विश्वास किया.



डेबोरा उस रात सोई नहीं.

जब सब शांत हो गए, तब वो उठी और उसने एक लंबी धातु की "प्रोब" उठाई.

मस्कट बॉल (गोली) को निकालने के लिए तब "प्रोब" का इस्तेमाल किया जाता था.

उसे कुछ पट्टियाँ भी मिलीं.

डेबोरा वापस बिस्तर पर लेट गई.

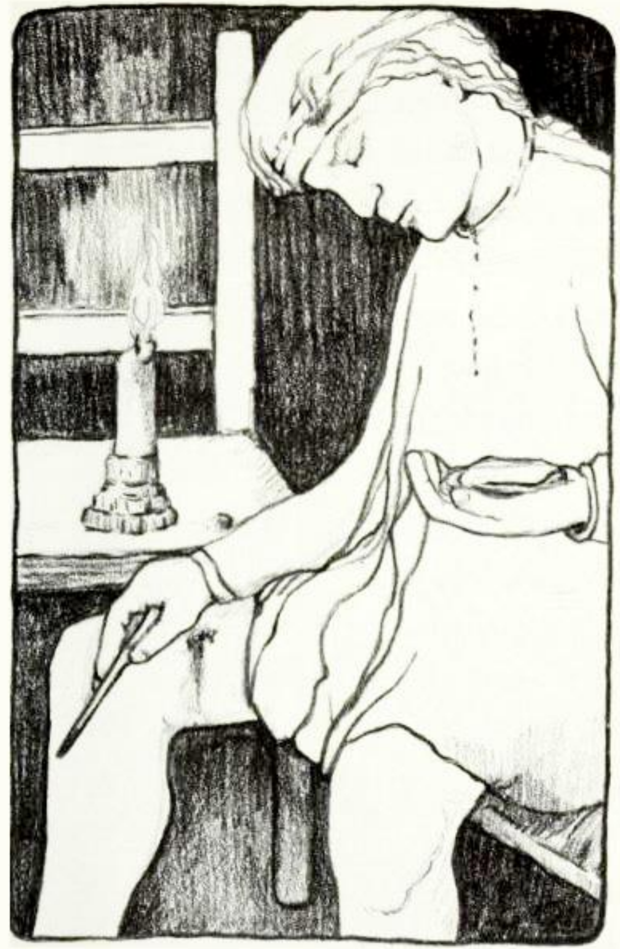
उसने "प्रोब" को अपने पैर में घुसाया.

उसने घाव में से एक मस्कट बॉल (गोली) बाहर निकाली.

दूसरी मस्कट बॉल (गोली) उसके पैर में ही धंसी रही.

डेबोरा उस तक नहीं पहुंच सकी.

वो गोली बहुत गहराई में थी.



अस्पताल में हर दिन डेबोरा इस बात को लेकर चिंतित रहती थी कि कोई उसके महिला होने का रहस्य जान लेगा.

वो इतनी चिंतित थी कि पूरी तरह से ठीक होने से पहले ही उसने अस्पताल छोड़ दिया.

सौभाग्य से उसका अगला काम आसान था.

वो जनरल पैटर्सन के घर में काम करने गई.

फिर, कुछ महीने बाद, उसे फिलाडेल्फिया भेज दिया गया.

अमेरिकी सैनिकों को प्रति माह 6.67 डॉलर का वेतन मिलना चाहिए था.

लेकिन कांग्रेस के पास उन्हें देने के लिए पैसे ही नहीं थे.

अधिकांश सैनिक बिना वेतन के लड़ रहे थे.

लेकिन कुछ ने लड़ने से इनकार कर दिया.

इसके बजाय, उन्होंने स्टेट हाउस पर कब्जा कर लिया.

कांग्रेस को प्रिंसटन, न्यू जर्सी जाना पड़ा.

क्रोधित लोगों को शांत करने के लिए डेबोरा को 1,500 अन्य सैनिकों के साथ फिलाडेल्फिया भेजा गया.





जाड़ा आया.

डेबोरा के जूते घिस चुके थे.

पर सेना, अपने सैनिकों को कपड़े नहीं देती थी.

सैनिकों को खुद अपनी वर्दी खरीदनी पड़ती थी.

डेबोरा के पास नए जूते खरीदने के लिए पैसे नहीं थे.

उसके लहूलुहान पैर, बर्फ में लाल धब्बे छोड़ते थे.

जल्द ही वो फिर बीमार पड़ गई.

एक बार फिर सिपाही उसे अस्पताल ले गए.

इस बार डेबोरा कई दिनों तक सोई रही.

डॉक्टरों ने सोचा कि वो मर चुकी थी.

डेबोरा यह सुन पा रही थी कि लोग उसे दफनाने की योजना बना रहे थे.

लेकिन कमजोरी के कारण वो रो भी नहीं पाई.

जब एक नर्स वहाँ से गुज़री, तो उसने डेबोरा के कराहने की आवाज सुनी.

नर्स उसकी मदद के लिए दौड़ी.

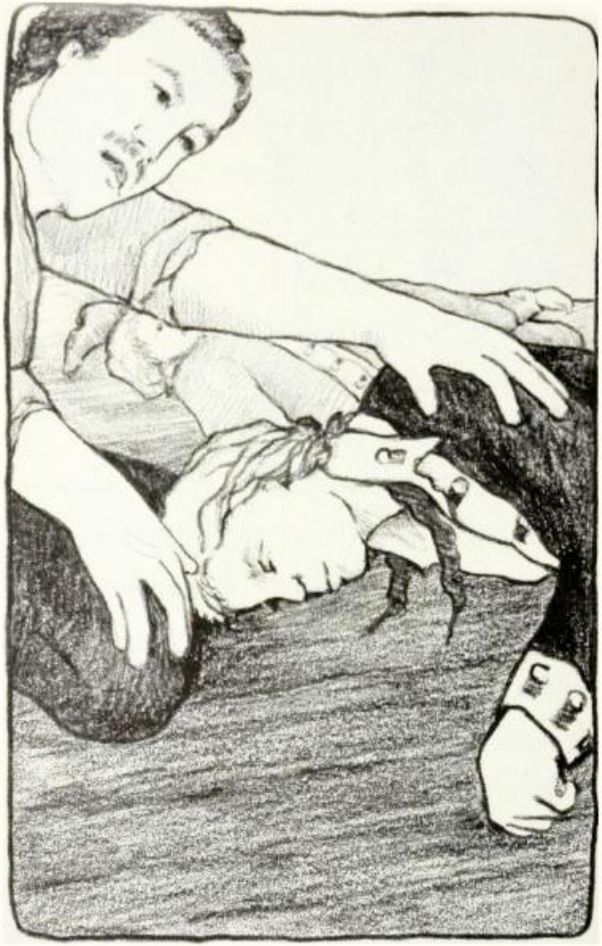
डॉ. बिन्नी ने डेबोरा की नब्ज की जांच की.

उन्हें नब्ज़ में कोई हलचल महसूस नहीं हुई.

फिर उन्होंने वो उसके दिल को महसूस करने के लिए उसकी शर्ट के अंदर हाथ डाला.

पर डेबोरा की छाती के चारों ओर बंधा कपड़ा रास्ते में आया.

डॉ. बिन्नी ने कपड़े को फाड़ डाला.



फिर वो आश्चर्य से देखते रह गए.

अब कोई संदेह नहीं था.

सैनिक शर्टलेफ एक महिला थी!

डॉ. बिन्नी ने डेबोरा के महिला होने के सच को एक रहस्य बनाए रखा,

लेकिन उन्हें लगा कि सैनिक अस्पताल किसी महिला के लिए एक ठीक जगह नहीं थी.

इसलिए वो डेबोरा को अपने परिवार के साथ रहने के लिए घर ले गए.

डेबोरा अभी भी अपनी सेना की वर्दी पहनती थी.

डॉ. बिन्नी के परिवार को कभी यह पता नहीं चला कि वो एक महिला थी.

जब वह ठीक हो गई, तो डेबोरा अपनी रेजिमेंट में वापस चली गई.

क्रांतिकारी युद्ध समाप्त हो रहा था.

1783 में डेबोरा को, वेस्ट पॉइंट पर बुलाया गया.

देश में शांति बहाल हो गई थी.

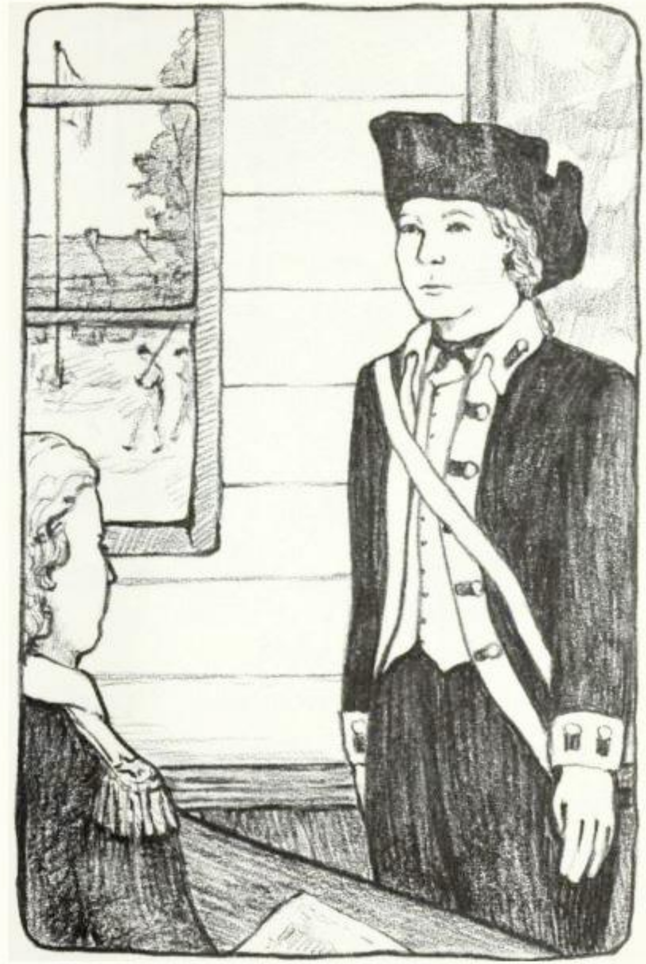
अमेरिकी जीत गए थे!

अब डेबोरा के रेजिमेंट की जरूरत नहीं रही थी.

जब वह वेस्ट पॉइंट पहुंची, तो जनरल पैटरसन ने डेबोरा को बुलाया.

जनरल पैटरसन ने अपनी मेज पर रखे एक पत्र की ओर देखा.

वो पत्र डॉ. बिन्नी का था.





जनरल पैटर्सन हँसे.

मेरी सेना में कोई महिला नहीं हो सकती, उन्होंने सोचा.

जनरल ने डेबोरा को भी वो पत्र दिखाया.

उन्होंने सोचा कि डेबोरा भी उसे देखकर हंसेगी.

पर पत्र देखकर डेबोरा का चेहरा लाल हो गया.



जनरल पैटरसन ने उसे देखा.

"प्राइवेट शर्टलेफ," उन्होंने कहा, "मुझे यह सवाल पूछना है. क्या आप एक महिला हैं?"

"हाँ, सर," डेबोरा ने उत्तर दिया. "मैं एक महिला हूँ. मेरा असली नाम डेबोरा सैम्पसन है."

बाद में क्या हुआ?

डेबोरा सैम्पसन को 23 अक्टूबर 1783 को, सेना से सम्मानपूर्वक छुट्टी दे दी गई. वो मैसाचुसेट्स लौट आईं, जहां वो शॉन में अपने चाचा के साथ रहने लगीं. पास में बेंजामिन गैनेट नाम का एक युवक रहता था. दोनों में प्यार हो गया और अप्रैल, 1784 में उनकी शादी हुई. उनके तीन बच्चे हुए: अर्ल, मैरी और पेशेंस. उन्होंने चौथे बच्चे, सुज़ाना शेफर्ड को गोद लिया. सुज़ाना की माँ की प्रसव के दौरान मृत्यु हो गई थी, और उसके पिता अकेले उसकी देखभाल नहीं कर सकते थे.

डेबोरा और बेंजामिन की खेती बहुत अच्छी नहीं चली. उन्हें पैसों की जरूरत थी, इसलिए डेबोरा भाषण देकर कुछ कमाती थीं. वो अपनी सेना की वर्दी पहनकर भाषण देने जाती थीं. डेबोरा सैम्पसन अमेरिका में पहली महिला व्याख्याता थीं. उन्होंने लोगों को अपने क्रांतिकारी युद्ध के अनुभवों के बारे में बताया.

डेबोरा को मैसाचुसेट्स सीनेट से $ 95 का आर्मी बैक-पे मिली. क्योंकि वो घायल हो गईं थीं इसलिए पॉल रेवरे ने उन्हें एक महीने में 8 डॉलर की संघीय पेंशन भी दिलावाई.

डेबोरा सैम्पसन की मृत्यु 1827 में हुई और उन्हें शेरोन, मैसाचुसेट्स में दफनाया गया. उनके मकबरे के पीछे लिखा है, "डेबोरा सैम्पसन गैनेट. रॉबर्ट शर्टलेफ, महिला सैनिक, सर्विस 1781-1783."